कारखानों में काम करने वालों का कहना है कि कारोबार पर पहले भी संकट के बादल छाए हुए थे, लेकिन ऐसे काले दिन नोटबंदी के कारण ही आए हैं।

का भुगतान नहीं करने वाले किसानों को बिचौलियों और एजेंसियों से राहत देने के लिए उन्होंने कहा कि सरकार ने अब फैसला किया है कि इस तरह के

बकाये के भुगतान के लिए समय-सीमा निर्धारित की जाए। नए जिलों के निर्माण पर बनर्जी ने कहा कि पहले चरण में आसनसोल, झाड़ग्राम और कलिम्पोंग का निर्माण किया जाएगा जबकि अगले चरण में सुंदरवन को नया जिला बनाया जाएगा।

किया किया गया। मूर्ति के पास से मोमबत्ती जलाकर पीड़ितों को श्रद्धांजलि दी गयी। इस मौके पर स्वास्थ्य शिविर और रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया।

आर्थिक तंगी से जूझ रही हैं 'स्लम गर्ल' आयशा नूर

पहचान तो बनी, कठिनाइयां जस की तस

- निःशुल्क सिखाती हैं लड़कियों को आत्मरक्षा के गुर

कोलकाता, रवि शंकर

आयशा नूर को सम्मानित करतीं जिलिअन हसलम, एम ए अली

कराटे में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तीन स्वर्ण पदक जीतने वाली कोलकाता की 'स्लम गर्ल' आयशा नूर लड़कियों को आत्मरक्षा के गुर सिखाने में जुटी हैं। 2012 में दिल्ली में हुई निर्भया कांड के बाद ही नूर ने इस दिशा में नेक पहल की। इंडियन कराटे एसोसिएशन के बैनर तले वह लड़कियों को किसी भी विपरीत परिस्थिति में लड़ने के लिए तो तैयार कर ही रही हैं कराटे में देश को नयी पहचान देने में भी जुटी हैं। इसके बावजूद राज्य या केंद्र सरकार की ओर से आयशा की इस पहल को वित्तीय प्रोत्साहन नहीं मिला है। मिर्गी की बीमारी से पीड़ित आयशा को अपने घर की खराब माली हालत के बीच ही जीवन गुजारा करना पड़ रहा है। घर में मां कपड़ों को सिलकर घर की दैनिक जरूरतों को पूरा करती है। ऐसे में इलाज का पैसा कहां से जुटे?

आयशा नूर के कोच व इंडियन कराटे एसोसिएशन के प्रेसिडेंट एमए अली बताते हैं कि आयशा जब छोटी थी तो जिद कर अपने भाई के साथ कराटे सीखने के लिए आती थी। उसकी लगन देखकर उन्होंने आयशा को कराटे का प्रशिक्षण देना शुरू किया। दुबली-पतली होने के बावजूद वह अपने प्रतिद्वंदियों को पछाड़ देती थी। क्षेत्रीय स्तर पर अपने अपना दबदबा बनाने के बाद आयशा ने राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में खेलना शुरू कर दिया। 2010 आते-आते वह कई राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं जीत चुकी थी। 2010 में उसने मुंबई में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पहली प्रतियोगिता वर्ल्ड फूनाकोशी कराटे प्रतियोगिता में भाग लिया व सोना जीता। 2012 में उसे अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चुना गया लेकिन पैसे के कारण वह नहीं बाहर जा सकी। 2013 में फिर चुने जाने पर मां के जेवर बेचकर, उधार लेकर व इधर-उधर से पैसे का जुगाड़ कर वह थाइलैंड गयी व सोना जीता। 2015 में एक बार फिर से उसने अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल जीता। धीरे-धीरे दुनिया में आयशा की चर्चा होने लगी लेकिन अपने देश या राज्य से कोई वित्तीय सहायता नहीं मिली। न ही किसी कॉरपोरेट ने इसके लिए संपर्क किया है।

एमए अली के अनुसार पैसे के कारण ही आयशा से प्रशिक्षित लड़कियों की टीम विश्व मार्शल आर्ट्स प्रतियोगिता में भाग नहीं ले पा रही है। टीम की 20 लड़कियों को कोई प्रायोजक नहीं मिल पा रहा है। इनमें से कई लड़कियां ऐसी हैं जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़िया प्रदर्शन किया है।

आयशा को सरकारी सहायता के बारे में पूछने पर अली ने बताया कि खेलमंत्री रहते हुए पहली बार मदन मित्रा ने सहायता का आश्वासन दिया था लेकिन कोई आश्वासन नहीं मिला। 2015 में राज्य के अल्पसंख्यक विभाग ने संपर्क कर पूछा था कि आयशा की किस प्रकार सहायता की जा सकती है। आयशा ने महिला पुलिस को प्रशिक्षण देने का प्रस्ताव रखा था जिसके एवज में मिलने वाली राशि से उसकी माली हालत सुधर जाती लेकिन फिर बात कुछ आगे नहीं बढ़ सकी। आज घर में सीमित आय के बावजूद आयशा का उत्साह कम नहीं हुआ है। अपने लक्ष्य के लिए समर्पित आयशा का कहना है के वह जीवन पर्यंत लड़कियों को आत्मरक्षा के लिए प्रशिक्षण देती रहेंगी।